धारा (4) (1) ख (i)
संगठन की विशिष्टियाँ कृत्य एवं कर्तव्य

पशुपालन विभाग की स्थापना पशुधन एवं पशुपालन उद्योग विकास योजनाओं का गठन एवं कार्यान्वयन हेतु जुलाई 1945 में हुई। इस विभाग को स्वतंत्र विभाग का दर्जा दिसम्बर 1949 में प्राप्त हुआ। तब से यह विभाग कार्यरत है। पशुपालन के बहुमुखी विकास के लिये बिहार राज्य में एक पशुपालन निदेशालय, नया सचिवालय (विकास भवन), पटना में कार्यरत है, जिसके माध्यम से पशुओं के नस्ल सुधार, रोग नियंत्रण, पौष्टिक चारा दाना उत्पादन, पशुओं के रख–रखाव एवं पशुपालकों के ज्ञानवर्द्धन एवं राज्य को बहुमुल्य सम्पदा को बनाये रखने की दृष्टि से विभिन्न योजनाओं, परियोजनाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से निरन्तर सेवा उपलब्ध करा रहा है ताकि पशुधन उत्पादन में वृद्धि के साथ–साथ ग्रामीण खासकर कमजोर लोगों के आर्थिक स्तर को ऊँचा उठाकर उन्हें आत्म निर्भर बनाया जा सके।

पशुपालन विभाग के विकास के लिये विभागीय मंत्री एवं सचिव सर्वोच्च उत्तरदायी सर्वाधिकारी है। सचिव के सहयोग के लिये अपर सचिव, संयुक्त सचिव, उप सचिव एवं अवर सचिव का पद सृजित है। विभाग का समस्त प्रभार निदेशक पशुपालन को है। निदेशक के सहयोग के लिये निदेशालय स्तर पर अपर निदेशक (पशु उत्पादन), संयुक्त निदेशक (पशु स्वास्थ्य), संयुक्त निदेशक (मु0), संयुक्त निदेशक (सांख्यिकी), उप निदेशक (मु0), उप निदेशक (सूकर विकास), विशेष उप निदेशक सांख्यिकी, उपाधीक्षक पशुगणना एवं सहायक निदेशक (सांख्यिकी) का पद सृजित है। निदेशालय स्तर पर विभागीय कार्यो के निष्पादन हेतु निदेशालय में 7 प्रशाखायें कार्यरत है। विभागीय कार्यो के सम्पादन, पर्यवेक्षण, प्रशासन एवं कार्यान्वयन हेतु कार्यरत विभागीय संस्थान निम्न प्रकार है ः–

क्षेत्रीय निदेशक कार्यालय	–	8
जिला पशुपालन कार्यालय	–	38
अनुमण्डल पशुपालन कार्यालय	–	36
प्रखंड पशुपालन कार्यालय	–	405
प्रांतीयकृत पशु अस्पताल	–	39

चलंत पशु चिकित्सालय	–	29
प्रथम वर्गीय पशु चिकित्सालय	–	1137
पशु स्वास्थ्य उत्पादन संस्थान	–	1
सूचना एवं प्रसार कार्यालय	–	1
पशु प्रजनन प्रक्षेत्र डुमराव	–	1
पशुपालन प्रशिक्षण विद्यालय डुमराव	–	1
कुक्कुट प्रक्षेत्र	–	04
कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र	–	1434 कार्यरत 716
चिकित्सा उप केन्द्र	–	2380
पशु विकास कार्यालय	–	23
फ्रोजेन सिमेन बैंक	–	4
फ्रोजेन सिमेन बैंक–सह–वुलस्टेशन	–	1
फ्रोजेन सिमेन स्टोरेज केन्द्र	–	16
गौशाला विकास पदाधिकारी कार्यालय	–	1
पशु रोग निदान प्रयोगशाला	–	1
अनुमंडल स्तरीय पैथोलाजिकल्स लैब	–	101

कार्यालय खोलने का समय

समय	–	**9.30 बजे पूर्वाहन से**
कार्यालय बन्द होने का समय 6.00 बजे अपराह्न		
अवकाश का दिन		शनिवार एवं रविवार

निदेशालय में कार्यरत शाखाओं का कार्य निम्न प्रकार हैः–

शाखा–7	–	अपराजपत्रित स्थापना
शाखा–8	–	बजट एवं कय आपुर्त्ति शाखा
शाखा–9	–	लेखा शाखा
शाखा–10	–	योजना अनुश्रवण एवं मुल्यांकन
शाखा–11	–	निगरानी एवं विधि शाखा
शाखा–12	–	पशु गणना एवं लोक सूचना
शाखा–13	–	टंकण निर्गम संसदीय एवं अन्य कार्य

पशु स्वास्थ्य सेवा को वैज्ञानिक आवरण प्रदान करने, टीकौषधियों के उत्पादन, पशुओं के वैज्ञानिक ढंग से प्रजनन, संतुलित आहार तथा पशुओं में होने वाले कुपोषण रोगों की रोक थाम का कार्य पशु स्वास्थ्य एवं उत्पादन संस्थान से संबंधित है। यह संस्थान पटना में स्थापित है; इस संस्थान के प्रभारी निदेशक पशु स्वास्थ्य एवं उत्पादन संस्थान हैं। इनपर सौंपे गये उत्तरदायित्वों में सहयोग देने हेतु संस्थान में विभिन्न शाखाओं में विषय विशेषज्ञ वैज्ञानिक पदाधिकारी कार्यरत है।

सभी विकास योजनाओं को किसानों एवं पशुपालकों तथा क्षेत्रीय प्रसार कार्य हेतु सूचना एवं प्रसार कार्यालय पटना में कार्यरत है। इसके प्रभारी पदाधिकारी सहायक निदेशक (पशुपालन सूचना एवं प्रसार) बिहार, पटना होते है। गौशाला विकास पदाधिकारी का एक पद सृजित है, जिनका मुख्यालय पटना है।

विभाग से संबंधित सभी कार्यक्रमों के प्रशासनिक कार्यान्वयन, पर्यवेक्षण, हेतु विभिन्न क्षेत्रों जैसे पटना, मगध, सारण, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, सहरसा, पूर्णियाँ एवं भागलपुर में क्षेत्रिय निदेशक पशुपालन का पद सृजित है। सभी क्षेत्र के क्षेत्रीय निदेशक पशुपालन का मुख्यालय प्रमंडीय मुख्यालय में ही होता है। इनके प्रशासन एवं प्रावेधिक उत्तरदायित्वों के निष्पादन में सहायता देने के लिये प्रत्येक जिलों में जिला पशुपालन पदाधिकारी के पद सृजित है। इसी प्रकार अनुमण्डल स्तर पर अनुमंडल पशुपालन पदाधिकारी एवं प्रखंड स्तर पर प्रखंड पशुपालन पदाधिकारी के पद सृर्जित है।

पशु चिकित्सा एवं पशु रोगों की रोक थाम के लिये 39 पशु अस्पताल, 1137 प्रथम वर्गीय पशु चिकित्सालय एवं 29 चलंत पशु चिकित्सालय कार्यरत है इसके प्रभारी पदाधिकारी क्रमशः पशु शल्य चिकित्सक, भ्रमणशील पशु चिकित्सा पदाधिकारी एवं चलंत पशु चिकित्सा पदाधिकारी होते है। पशुपालन एवं पशु विकास कार्यक्रमों के तहत पशुपालन का वैज्ञानिक आदान–प्रदान कर एक उद्योग के रूप में विकसित करने लिए नश्ल सुधार कार्यक्रम चलाने के लिए विदेशी नश्ल के जर्सी, फ्रोजियन एवं ग्रामीण क्षेत्रों में उन्नत शंकर नश्ल के साँढों का उपयोग कर राज्य में दूध उत्पादन में वृद्धि लाने हेतु किया जा रहा है। नस्ल सुधार हेतु तरल रूप एवं फ्रोजेन शुक्र वृद्धि से कृत्रिम गर्भाधान कराने के लिए 23 पशु विकास कार्यालयों एवं 1434 कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र की स्थापना की गयी है। वर्तमान में 716 कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र कार्यरत हैं। शेष केन्द्रों की स्थापना की जा रही है।